

سُورَةُ الْمُجَادَلَةِ

Surah 58 — Al-Mujaadila (The Pleading Woman) · Medinan · 22 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَدِّلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۖ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ ۚ بَصِيرٌ

ऐ रसूल जो औरत (खुला) तुमसे अपने शौहर (उस) के बारे में तुमसे झगड़ती और खुदा से गिले शिकवे करती है खुदा ने उसकी बात सुन ली और खुदा तुम दोनों की गुप्तगू सुन रहा है बेशक खुदा बड़ा सुनने वाला देखने वाला है

2

الَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْكُمْ مَنْ نِسَائِهِمْ مَا هُنَّ أُمَّهَاتِهِمْ [٢] إِنْ أُمَّهَاتُهُمْ إِلَّا آلِي وَلَدْنَهُمْ [٣]
وَأَنَّهُمْ لَيَقُولُنَّ مُنْكَرٌ [٤] أَمَّا الْقَوْلُ وَزُورٌ [٥] وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ [٦]

तुम में से जो लोग अपनी बीवियां के साथ ज़हार करते हैं अपनी बीवी को माँ कहते हैं वह कुछ उनकी माँ नहीं (हो जातीं) उनकी माँ तो बस वही हैं जो उनको जनती हैं और वह बेशक एक नामाकूल और झूठी बात कहते हैं और खुदा बेशक माफ करने वाला और बड़ा बख्शने वाला है

3

وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا؟ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۚ مِّن قَبْلِ أَن يَتَمَاسَا ۚ ذَٰلِكُمْ تُوَعِّظُونَ بِهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ

और जो लोग अपनी बीवियों से ज़हार कर बैठे फिर अपनी बात वापस लें तो दोनों के हमबिस्तर होने से पहले (कफ़ारे में) एक गुलाम का आज़ाद करना (ज़रूरी) है उसकी तुमको नसीहत की जाती है और तुम जो कुछ भी करते हो (ख़ुदा) उससे आगाह है

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتِمَّاسَا ۖ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ
فَإِطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ۚ ذَٰلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ
وَاللَّكُفْرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ

फिर जिसको गुलाम न मिले तो दोनों की मुक़ाबत के क़बल दो महीने के पै दर पै रोज़े रखें और जिसको इसकी भी कुदरत न हो साठ मोहताजों को खाना खिलाना फर्ज़ है ये (हुक़्म इसलिए है) ताकि तुम खुदा और उसके रसूल की (पैरवी) तसदीक़ करो और ये खुदा की मुकर्रर हदें हैं और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ كُتِبُوا ۖ كَمَا كُتِبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَقَدْ أَنْزَلْنَا
آيَاتٍ ۚ بَيَّنَّتْ ۚ وَاللَّكُفْرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۚ

बेशक जो लोग खुदा की और उसके रसूल की मुखालेफ़त करते हैं वह (उसी तरह) ज़लील किए जाएँगे जिस तरह उनके पहले लोग किए जा चुके हैं और हम तो अपनी साफ़ और सरीही आयतें नाज़िल कर चुके और काफ़िरों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۚ أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ

जिस दिन खुदा उन सबको दोबारा उठाएगा तो उनके आमाल से उनको आगाह कर देगा ये लोग (अगरचे) उनको भूल गये हैं मगर खुदा ने उनको याद रखा है और खुदा तो हर चीज़ का गवाह है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَا يَكُونُ مِنْ نَجْوَى ثَلَاثَةٍ إِلَّا
هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْثَرُ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ
مَا كَانُوا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۚ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

क्या तुमको मालूम नहीं कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) खुदा जानता है जब तीन (आदमियों) का खुफिया मशवेरा होता है तो वह (खुद) उनका ज़रूर चौथा है और जब पाँच का मशवेरा होता है तो वह उनका छठा है और उससे कम हो या ज्यादा और चाहे जहाँ कहीं हो वह उनके साथ ज़रूर होता है फिर जो कुछ वह (दुनिया में) करते रहे क़यामत के दिन उनको उससे आगाह कर देगा बेशक खुदा हर चीज़ से खूब वाकिफ़ है

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا؟ عَنِ النَّجْوَى ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا؟ عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ بِالْإِثْمِ
وَالْعُدْوَنِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ
فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ؟ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا؟ فَبِئْسَ الْمَصِيرُ

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनको सरगोशियाँ करने से मना किया गया गरज़ जिस काम की उनको मुमानिअत की गयी थी उसी को फिर करते हैं और (लुत्फ़ तो ये है कि) गुनाह और (बेजा) ज्यादाती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशियाँ करते हैं और जब तुम्हारे पास आते हैं तो जिन लफज़ों से खुदा ने भी तुम को सलाम नहीं किया उन लफज़ों से सलाम करते हैं और अपने जी में कहते हैं कि (अगर ये वाकई पैग़म्बर हैं तो) जो कुछ हम कहते हैं खुदा हमें उसकी सज़ा क्यों नहीं देता (ऐ रसूल) उनको दोज़ख ही (की सज़ा) काफी है जिसमें ये दाखिल होंगे तो वह (क्या) बुरी जगह है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا؟ إِذَا تَنَجَّيْتُمْ فَلَا تَتَنَجَّوْا؟ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَنِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ
وَتَتَنَجَّوْا؟ بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَى؟ وَاتَّقُوا؟ اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ

ऐ ईमानदारों जब तुम आपस में सरगोशी करो तो गुनाह और ज्यादाती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशी न करो बल्कि नेकीकारी और परहेज़गारी की सरगोशी करो और खुदा से डरते रहो जिसके सामने (एक दिन) जमा किए जाओगे

إِنَّمَا النَّجْوَى مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ ءَامَنُوا؟ وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ
اللَّهِ؟ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ

(बरी बातों की) सरगोशी तो बस एक शैतानी काम है (और इसलिए करते हैं) ताकि ईमानदारों को उससे रंज पहुँचे हालाँकि खुदा की तरफ से आज्ञादी दिए बगैर सरगोशी उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकती और मोमिनीन को तो खुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا؟ إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا؟ فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا؟ يَفْسَحِ اللَّهُ
لَكُمْ؟ وَإِذَا قِيلَ أَنْشُرُوا؟ فَأَنْشُرُوا؟ يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا؟ مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا؟
الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ؟ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ؟

ऐ ईमानदारों जब तुमसे कहा जाए कि मजलिस में जगह कुशादा करो वह तो कुशादा कर दिया करो खुदा तुमको कुशादगी अता करेगा और जब तुमसे कहा जाए कि उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो जो लोग तुमसे ईमानदार हैं और जिनको इल्म अता हुआ है खुदा उनके दर्जे बुलन्द करेगा और खुदा तुम्हारे सब कामों से बेखबर है

12

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِذَا نُجِيتُمُ الرُّسُولَ فَاقْدَمُوا ۚ بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰكُمُ صَدَقَةٌ ۚ ۚ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۚ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ فَإِنْ لَّمْ تَجِدُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۚ رَّحِيمٌ

ऐ ईमानदारों जब पैगम्बर से कोई बात कान में कहनी चाहो तो कुछ खैरात अपनी सरगोशी से पहले दे दिया करो यही तुम्हारे वास्ते बेहतर और पाकीज़ा बात है पस अगर तुमको इसका मुक़दूर न हो तो बेशक खुदा बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

13

ءَأَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوا ۚ بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰكُمُ صَدَقْتُمْ ۚ ۚ فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا ۚ وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا ۚ الصَّلَاةَ وَءَاتُوا ۚ الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا ۚ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ ۚ بِمَا تَعْمَلُونَ

(मुसलमानों) क्या तुम इस बात से डर गए कि (रसूल के) कान में बात कहने से पहले खैरात कर लो तो जब तुम लोग (इतना सा काम) न कर सके और खुदा ने तुम्हें माफ़ कर दिया तो पाबन्दी से नमाज़ पढ़ो और ज़कात देते रहो और खुदा उसके रसूल की इताअत करो और जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे बाख़बर है

14

ۚ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا ۚ قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَّا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ

क्या तुमने उन लोगों की हालत पर ग़ौर नहीं किया जो उन लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर खुदा ने ग़ज़ब ढाया है तो अब वह न तुम मे हैं और न उनमें ये लोग जानबूझ कर झूठी बातों पर क़समें खाते हैं और वह जानते हैं

15

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا ۚ شَدِيدًا ۚ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

खुदा ने उनके लिए सख्त अज़ाब तैयार कर रखा है इसमें शक़ नहीं कि ये लोग जो कुछ करते हैं बहुत ही बुरा है

16

أَتَّخَذُوا ۚ أَيْمَنَهُمْ جُنَّةً ۚ فَصَدُّوا ۚ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ ۚ مُّهِينٌ ۚ

उन लोगों ने अपनी क़समों को सिपर बना लिया है और (लोगों को) खुदा की राह से रोक दिया तो उनके लिए रूसवा करने वाला अज़ाब है

17

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ أَوْ لَيْسَ لَكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

खुदा सामने हरगिज़ न उनके माल ही कुछ काम आएँगे और न उनकी औलाद ही काम आएगी यही लोग जहन्नुमी हैं कि हमेशा उसमें रहेंगे

18

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۖ فَيَحْلِفُونَ لَهُ ۖ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ ۖ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۖ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ

जिस दिन खुदा उन सबको दोबार उठा खड़ा करेगा तो ये लोग जिस तरह तुम्हारे सामने कसमें खाते हैं उसी तरह उसके सामने भी कसमें खाएँगे और ख्याल करते हैं कि वह राहे सवाब पर हैं आगाह रहो ये लोग यकीनन झूठे हैं

19

أَسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَاهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ ۖ أَوْ لَيْسَ لَكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۖ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ

शैतान ने इन पर क़ाबू पा लिया है और खुदा की याद उनसे भुला दी है ये लोग शैतान के गिरोह है सुन रखो कि शैतान का गिरोह घाटा उठाने वाला है

20

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ أَوْ لَيْسَ لَكَ فِي الْأَذَلِّينَ

जो लोग खुदा और उसके रसूल से मुखालेफ़त करते हैं वह सब ज़लील लोगों में हैं

21

كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا ۖ وَرُسُلِي ۖ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۖ

खुदा ने हुक्म नातिक दे दिया है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ज़रूर ग़ालिब रहेंगे बेशक खुदा बड़ा ज़बरदस्त ग़ालिब है

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَلَوْ
 كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۚ أَوَلَيْكَ كِتَابٌ فِي قُلُوبِهِمْ
 الْإِيمَانُ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ ۚ مِنْهُ ۚ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
 فِيهَا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا ۚ عَنْهُ ۚ أَوَلَيْكَ حِزْبُ اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ
 هُمُ الْمُفْلِحُونَ

जो लोग खुदा और रोज़े आखेरत पर ईमान रखते हैं तुम उनको खुदा और उसके रसूल के दुश्मनों से दोस्ती करते हुए न देखोगे
 अगरचे वह उनके बाप या बेटे या भाई या खानदान ही के लोग (क्यों न हों) यही वह लोग हैं जिनके दिलों में खुदा ने ईमान को
 साबित कर दिया है और खास अपने नूर से उनकी ताईद की है और उनको (बेहिश्त में) उन (हरे भरे) बागों में दाखिल करेगा
 जिनके नीचे नहरे जारी है (और वह) हमेशा उसमें रहेंगे खुदा उनसे राज़ी और वह खुदा से खुश यही खुदा का गिरोह है सुन रखो
 कि खुदा के गिरोह के लोग दिली मुरादें पाएँगे